

## राम विजय नाट

### श्लोक

यन्नामास्तित लोक लोक शमनं यन्नाम प्रोभास्पदम् ।  
पाप्मापापयोधि तारणविधौ यन्नाम पीनप्लवः ।  
यन्नाम भवपात् पुनाति द्वययः प्राप्नोति मोक्षं कितौ ।  
तं श्रीराममहं महेश वरवं वन्दे सदा सावित्रम् ॥

### अपिच

येनाभाजि वनुः शिवस्य सहसा सीता समाश्वासिता ।  
येनाकारि परामवो भृगुपतेर्दक्षित रामस्य च ॥  
वैवेही विधिवद्विवाहमकरोत् निश्चिन्त्य यः पाधिवान् ।  
युष्माकं वितनोतु यो स भगवान् श्रीरामचन्द्रविधरम् ॥

### गीत

राम मुहाड—एकतालि ।

पद०—जय जग जीवन राम । कबलो पहि परनाम ॥  
पद०—याहे नाम गुणगुहे गाह । पापी परम पद पाह ॥  
ओहि भवताप आपारा । याहे स्मरणे कर पारा ॥  
अजगव भञ्जनकारी । पावल जनक कुमारी ॥  
नुप सब खेदल धाणे । कृष्ण किङ्करे एह धाणे ॥  
नान्दपन्ते मूयधारः । अलमति विस्तरेण । प्रथम माधवो-माधव  
इत्युक्त्वा श्रीरामचन्द्रं प्रणम्य तभासदः सम्बोध्य आह ।

### श्लोक

भो भोः सामाजिक मूर्ख शृणुष्वमधुना बुधा ।  
श्रीराम विजयं नाम नाटकं मोक्षसाधकम् ॥

### भटिमा

जय जय रघुकुल कमल प्रकाशक वासक नाशक भीति ।  
जय जय निजजन यातन घातन पातन पातक रीति ॥

हरक शरासन नाशन सासन  
छेदल भेदल छेदल दापे  
भृगुचर रामक रामक कामक  
भयभय भञ्जन सञ्जन रञ्जन  
योहि वनमाली वालिक वालि  
याहेरि कोद कटाक्ष निरिखि  
समरक नागर मागर सागर  
भक्तता भीता सीता नीता  
साफलस बाणी जानि जानि  
यत आतच्छा जङ्गा सङ्गा  
जगतक अन्तक सन्तक सन्तक  
भूमिक भार उठारल तारल  
ब्रह्मा महेश्वर किङ्कुर याकर  
त्रिभुवन कारण तारण भारण  
सोहि महेश्वर रामक नाटक  
याहेरि कथने कथने करइ  
असारत सारत फारत भारत  
पद भरविन्द अनिन्द गोविन्द  
धन जन जीवन पैचम बिजुरि  
जानव केजव देवक सेवा  
सब अपराधक बाधक साधक  
कहे कृष्ण किङ्कुर लोक निरन्तर

सूत्र०—ओ भो सभासद ! ाधुजन ! वे जगतक परम ईश्वर नारायण  
भूमिक भार हरण निमित्त दशरथ गुहे अवतरल सोहि भगवन्त  
श्रीराम रूपे ओहि सभामध्ये प्रवेश कयकहु सीता विवाह विहार  
नित्य परम कीनुके करव; ताहे सावधाने देखहु शुनहु ।

प्रथमे लक्ष्मण सहित श्रीराम प्रवेश । तदनन्तर सखी सब सहित  
सीताक प्रवेश । इति ज्ञात्वा सर्वे सावधाने स्वीयताम् ।

सूत्र०—आहे सङ्गी, कि वाच भुमिये ?

नृप सब बाण सन्धाने ।  
तापे पलायत प्राणे ॥  
कयलि दरप उपास्त ।  
जीवन जानकी कान्त ॥  
राजा कहु सुखाव ।  
कम्पित जलधिक जीव ॥  
जिला सेतु कय बन्ध ।  
पुढे बधिये दश कन्ध ॥  
बाधि विभीषण पाट ।  
कयलि पुनु उत्तपात ॥  
पूरल परमा काम ।  
सुरनर राजा राम ॥  
पडि पडि करतु सेवा ।  
योहि देवको देखा ॥  
जुन सब कय विशोभास ।  
कलिमल सकले विनाश ।  
नरतनु विफलेहि बाइ ।  
हुदि पङ्कज बह भाइ ॥  
उजुरि देख ने देखा ।  
सोहि धिला करि देखा ॥  
सिद्धि अडि हरि नाम ।  
डाकि बोलहु राम राम ॥

सङ्गी—सखि ! देव दुम्बुभि बाजत । आ श्रीरामचन्द्र मिलल ॥

श्लोक

प्रवेशमकरोत् कामं रामो राजीव सोधनः ।  
ससौदरो धनुः प्याजी रूपेणाप्रतिमो भुवि ॥

सूत्र०—आहे सभासद ! याकर कथा कहैछि से श्रीराम लक्ष्मण सहित ए  
आवत ।

गीत

राम सिन्धुरा—एक सालि

ध्रु०—भेलि परवेश परवेश रघुनाथे । मङ्गे सोवर मरधनु धरि हाते ॥  
पद—स्वाम रहिर धिर पीत परकाश । पङ्कज नयन बदन मन्द हास ॥  
मणिमय मुकुट कुण्डल गण्डे डोले । हेरि मुसति मन मनमथ भोले ॥  
माणिक मोति ज्योति हेम हारा । गगन इजोर वेषन रुचि तारा ॥  
चरणक रज्जि मज्जिजर मणि रोल । कृष्ण किङ्कुर ओहि धङ्कुर बोल ॥

सूत्र०—ओहि परकारे श्रीरामचन्द्र प्रवेश कय एक पाय हुया रहल ।  
तदनन्तर सीताक प्रवेश शुनहु । आहे सङ्गी, किवाच बाजे ?

सङ्गी—अः देववाच बाजे ।

सूत्र०—अः जनक भद्रिनी सोता सखी सब सहित मिलल मिलल ।

श्लोक

वकार जानकी काम प्रवेश सखी सङ्गीता ।  
चिन्तयन्ती रामचन्द्र चरणौ रुचिरानना ॥

सूत्र०—हे सामाजिक, सखी मदतमन्धरा कनकावती सहित जनकनन्दिनी  
सीतारामक चरणा चिन्ति प्रवेश कय आवे । आहे देखहु निरन्तरे  
हरि बोल ।

गीत

राम सुहाव—एकतालि ।

ध्रु०—आप जमक मुता कय परवेश । पेखिये बदन मदन मन मनेश ॥  
पद—माणिक मुकुट कुण्डल कय कान्ति । दसन ओंतिम नर मोतिम पन्ति ॥  
दमन हाथि जानक रुचि छोड़ । नील अञ्जना लोल लोचन बकोर ॥



कच्छुण कनक केयूर अनकाइ । रामक चरण चिन्तिये चित लाइ ॥  
पदपङ्कज सणि मञ्जिर रोष । रूपे भूषन भुले शङ्करे घाले ॥

सूत्र०—हे सामाजिक लोक ! से जनकनन्दिनी सीता सखी सब सहिते नृत्य करिये से जातिस्मर कन्या पुरुष जनमक कथा चित्ते परल । ताहे चुमरि परि प्रमदन कय रहल । ताहे देखि सखी मदनमन्वरा, सखी कनकायती बहुत भेलि धरि पुषत ।

सखी—आहे सखी, तुहू राजनन्दनी, कोन सम्पत्ति नहि धिक । कि निमित्ते तो हो बारम्बार विलाप करह ?

सखी—प्राण सखी, हामाक धपत, तोहार पावे लागु हामाक सत्तर कथा कह ।

### श्लोक

ततः सीता धिनिःश्वस्य चरिते पुन्यं जन्मनः ।

सखीभ्यां वर्णयामास स्वती मुदती गती ॥

सूत्र०—सीता धनि वेनि स्वरूप हुया आञ्चोरे आबि मुख मुचि विषयाग फोकारि सखी सबक सम्बोधित यचन बोलये लागल ।

सीता—आहे सखी सब ! राम अमाविनीक को पुचह ? हामु पुरव जनम ईश्वर नारायणक स्वामी इछा कयल । अनेक काय कलस करिये बहुत चरितत तपस्या कयलो । तदन्तरे आकाशी बाणी शुभल "आहे कन्या, तोहो ओहि जनमे स्वामीक भेट नाइलाय । आर जनमे श्री रामरूपे तोहोक विवाह करव ।" इहा जानि हामु अगनि प्रवेश प्राण छाड़ल । आहे सखी सब, से देव बाणी विफल भेल ; से श्रीराम चरण ओहि जनमे भेट नाहि भेलो ।

सूत्र०—ओहि धुनिते सीताक परम सन्ताप उपजल । हा राम स्वामी बुनि मोह हुया मानि लोषिट मैचे विलाप कयल ताहे देखह शुनह । निरन्तरे हरि बोल हरि ।

### गीत

राग सुहाइ-बुढवला ।

पद०—विमपति मैचलि माह नीर नयन सुराह ।  
धन धन स्वास फोकारल तनु चेतन नाई ॥

पद०—जिह विरहे दहे देहा दिस देखु अन्धियारि ।  
रमया बिनै मन जामर परमहचिकुमारी ।  
हा हरि हरि जम्भय जीव मैचे नायाइ ।  
राम चरणे लागु गति आयरि नाइ ॥

सूत्र०—ऐचन सीताक विलाप देखिये सखी सब प्रबोध बोलल ।

सखीसब—अहे प्राण सखि ! से भक्तक बान्धव पाधव तोहोक दुख दूर करव । पुरव जनमक तोहार स्वामी अवश्यक भेट पावव । हे सखी, ताप छाड़ह ।

सूत्र०—हे सामाजिक लोक ! जनकनन्दनी सीता किञ्चित् स्वस्थ हुया सखी सब सहित एक पाश हुया रहल । तदन्तर दशरथ राजाक प्रवेश देखह ।

### श्लोक

प्रवियेश महातेजा राजा दशरथस्तथा ।

छत्र चामर संकुतो धनुष्पाणिर्नृपोत्तम ॥

### गीत

राग कानाड़ा-परिताल ।

पद०—आये दशरथ पृथिवी नाथ । दुखे चामर छत्र धर माथ ॥

पद०—बुज्जय कीर धरिये धर चाप काम्पे रिपुसक याहे प्राताप ॥

त्रिभुवन ईश्वर रामक नाथ । याहे हेरि दूर होवय पाव ॥

सूत्र०—ऐचन प्रवेश कये राजा दशरथ परम हरिये बैठि रहल ।

### श्लोक

धिष्येज साकमातस्य विधवाभिषो महामुनिः ।

आशीर्वाद्य स्वदी तस्मै राज्ञे मन्त्रमुदीरयण ॥

सूत्र०—तदन्तर ऋषिराज कीशिक तिष्य सहिते आसिकहु राजा दशरथक आशीर्वाद्य करिये ये कहल, ता देखह शुनह । निरन्तरे हरि बोल हरि ।

### गीत

राग कानाड़ा-परिताल ।

पद०—आवत कोशिक धण्ड । माला माथे हाथे धर दण्ड ॥



पद—ताड़्य बाहु हरि गुण गाइ । सचकित नयन चतुर्दिके चाह ॥  
 सोभे मुलजित तिलक कपाल । हेरत कोपे जैसे यम काल ॥  
 सूत्र०—ऐचन प्रवेण दिखे ऋषिराज राजाक आशीर्वाद कयल ।

### श्लोक

चिरञ्जीव चिरञ्जीव चिरञ्जीव जनाधिप ।

पुत्र पत्नी समायुक्तः भक्तिमान् भव माधवे ॥

कौशिक—हे राजा दशरथ ! तोहो सपरिवारे चिरञ्जीव भव ।

सूत्र०—राजा ऋषिक आसन वैठाया परि परणाम कय कर मोरे बोल ।

वशरथ—हे मुनिराज ! तोहारि पद परखे आबु हामाद अयोध्या पुर पवित्र  
 भेल । सब दरशने आमार जनम सफल भेल । मुनि अब कोन  
 प्रयोजन साधो, हामाक आज्ञा करह । सभामध्ये सत्य अङ्गीकार  
 कय बोललो—आबु ये दान मागह, तोहोक सत्य सत्ये देववो ।

कौशिकऋषि—( राजाक वाणी सुनि हासि कौतुके उठिकहु नृत्य कयल )  
 आः मनोरथ साफल भेल । ( राजाक आशीर्वाद कः बोलल ) हे  
 नृपते ! तोहो पृथिवीक कल्पतरु ! तोहार ठाढ़ प्रार्थक कबहु निमुख  
 नाहि इहा जानो, किन्तु हामार प्रार्थना सुनह । हामु सिद्धाश्रमत  
 यज्ञ आरम्भल । ताहेक मारीच सुवाहु दोहो राक्षस विधिति  
 आचरय । मे मज रक्षा निमित्त तोहार राम लक्ष्मण दोहो कुमारक  
 हामार सङ्ग पठाव, तबे हामार मनोरथ सिद्ध हय ।

### श्लोक

तत्रिलम्बाभवद्भीतः पपात मूर्च्छितो भुवि ।

करोति कातरं राजा विधुरय चरणी मुनेः ।

सूत्र०—राजा ऋषिक ऐचन वचन सुनिये दुरन्त चिन्ताये पीड़ल ।  
 मूर्च्छित हुया पड़ल । तदनन्तरे स्वस्थ हुया ऋषिक चरणे परिकटु  
 कातर कय बोल ।

वशरथ—आहे मुनिराज ! हामार पुत्र राम लक्ष्मण से बासक । ताहेक  
 राक्षसक बिते चाव ! ओहि कोन ध्वजहार ! हा हा हे ऋषिराज,  
 यज्ञ रक्षा निमित्त हामाक मिया याव ।

सूत्र०—राजाक वचन सुनिये कौशिक परम कोपे भरनय ।

कौशिक—अये असत्यवादी ! राम लक्ष्मणक नाहि पठावह ?

सूत्र०—ओहि बुनि कोपे कम्पमाम हुया वेगे चलल । बाहु लाड़िये कोपे  
 चर्खय । राजा आबु हुया ऋषिर चरण धरि कहु वंश  
 विलाप कयल ता देखहु गुनह । निरन्तरे हरिबोल हरि ।

### गीत

राग सुहाइ—पति ताल

पृ०—करहु कल्या ऋषि सुत दान देहु ।

कोन मुहे कहव रामक तुहु नेहु ॥

पद—नेहकि राम राक्षस लागि मागि । आहे अधिक हृदये दहे आगि ॥  
 बालक राम किछुवे नाहि जाने । ताहे नाहेरि रहवि नाहि प्राणे ॥

वशरथ—आमक राक कैले राक्षसक हाथे दिते चाव ? इहा उचित नोहे ।  
 बाप ! रामक छाड़ि हामाक मिया याव ।

ऋषि—अये वशरथ ! तुहु रामक चरित्र किछु जानये नाहि । योग बले  
 हामु सये जानो । ओहि रामचन्द्र परम ईश्वर महा हरिक अंश  
 अवतार । अमुर राक्षस मारि भूमिक भार उतारव । इहा जानि  
 किछु चिन्ता नाहि करवि । सत्य राखि सत्यरे राम लक्ष्मणक  
 हामार सये पठाव ।

सूत्र—राजा ऋषिक वाणी सुनिकहु विधिजात्र स्वस्थ हुया ऋषिक हासे  
 राम लक्ष्मणक समपि देलहु कौशिक कौतुके राजकुमार दोहो संगे  
 लेया वेंचे चलल, ता देखहु गुनह, निरन्तरे हरि बोल हरि ।

### पथार

राग कानाड़ा

भयल कौशिक साधिये काम । पाबु पाबु चलल लक्ष्मण राम ॥  
 देखहु धनुक विजय वाण । लक्ष्मण राम पेखहि सब बात ॥  
 आश्रम याइते ऋषिक उचाट । पेखिये ताड़का बेइल बाट ॥  
 मिलिल भय्य पिशाचिनी हासे । काप्पे कौशिक पड़िये सरासे ॥  
 राजसी खाइ राख रघुनाथे । सुनिये राम धरन धनु शाने ॥  
 बुनिये निर्भय जोरल वाण । ताड़का हृदये कह सन्धान ॥



पड़ल पिनाची सेजि आढास । वसपाते तेचे लोक तरास ॥  
 हृदये आनन्द मिलिल अधिक । साधु साधु रामक बोध कीजिक ॥  
 हरिये सिहरे देहक लोम । आश्रम पाव आरम्भल होम ॥  
 देखिये घुम मारीच सुबाहु । चान्द मिलिते येच आवल राहु ॥  
 त्राये कोशिक कह्य आराधे । पेशु पेशु दोहो राक्षस आवे ।  
 अवरुनाय करहु मोहे प्राण । मुनिये राम धरल धनु बाण ॥  
 विधल हृदय मरमक सन्धाने । उडल राक्षस रामक बाणे ॥  
 भेलि सुबाहु सागरत पात । मारीच प्राण पडल लङ्कात ॥  
 नास गेल अवबोहो पिशाचे । कोतुक उठि कहु कोशिक नाचे ॥  
 रामक रङ्गे साधु साधु बोल । जय जय राम करव वतरोल ॥  
 सूत्र०—परम सन्तोषे कोशिक रामक आशोर्वादि कयल ।

### श्लोक

जयमु जयतु रामः पाथेकत्राण हेतुः रघुकुल कमलाक्षी सूर्यं वंशस्य देवः  
 हस्तु दुरितमेयां नाम सच्चीतनैः यः स्वजन सुत कलवैः जीवतु सः चिरायुः ॥  
 कोशिक—रघुकुल कमल प्रकाशक सुयं रामचन्द्र हामार आशीर्वादि पत्नी  
 पुत्र सहित चिरजीवी भव ।

सूत्र०—ओहि बुलि आशीर्वाद तुलसी देहन । श्रीराम माथा पाति रेलह ।  
 कोशिक—हे बाप रामचन्द्र ! तुहु हामरा परम उपकारी । मारिच सुबाहु  
 राक्षस मारि हामार पत्र सिद्ध कयल । तोहाक गुण सुजये नाहि  
 पारि । सम्प्रति प्रत्युपकार तोहोक का करव ।

सूत्र०—ओहि बुलि ऋषि मने विमरिष कम पुनु बोलज ।

कोशिक—आ ! साधु प्रवोजन मिलल । हे रघुनाथ ! आजु जानकी सीताक  
 स्वयम्भर मिलिले । हामु जानल, महेबाक धनु ये गुणविते पारव से  
 कम्पा सोहि पावे । से भुवन दुर्लभ भाग्यवती यव तव गृहिणी हय  
 हामार परम आनन्द मिलल । हामु योगवने जानो सोहि सीता पूर्व  
 जनमत बहुत तप आचरि तोहोक स्वामी न पावल । ताहेक स्मरिये  
 ओहि जनमे तोहार चरणविमल सज्जंथा यिक । परम विरहातुर  
 हुधा तोमाक लागि रह्ये । हे सुन्दरीक रूप सम्प्रति कह्य ताहे  
 पुनह ।

### अटिमा

कि कह्य रूप कुमारीक राम । कलक पुतलि सुल तनु अनुपाम ॥  
 रतन तिलक खोले अलक कपोल । हरिये भूभङ्ग त्रिभुवन मोल ॥  
 देखिये वदन चान्द भेलि लाज । नयन निरिखि कमल जल माज ॥  
 हरिये भुज युग मिलल उछळू । ललित मृणाल भजल जलपङ्क ॥  
 आरतक करतल मुनिमन मोहा । कलक चलका आजू कह सोहा ॥  
 वम्पुति अधिक अधर अह कान्ति । डाहिम निविड़ बीज दन्त पान्ति ॥  
 इषत हाथि भदन मोह माइ । नाथा तिलकुल कमलिनी माइ ॥  
 तवयोधन स्तन बदरी प्रमाण । उह करिकर कटि डम्बरक ठाम ॥  
 पव पल्लव गव पङ्कज कान्ति । चम्पक पापरि आजू लिक पान्ति ॥  
 नखचय चार चान्द परकाश । लहु लहु मल गज ममम दिलास ॥  
 कल सावणव विधि निरमिलजानि । कोकिल नाद अमिका जुरे वाणी ॥  
 तुहे सुकुमार रूपे मोह हीग । राज कुमारीक वसत तवीन ॥  
 सोहि घर रमणी घरणी यव हुह । तव गृहबास साम्फल तव हुह ॥  
 कहलो स्वकृप वचन श्रीराम । बलव अविशम्य जनकक ठाम ॥  
 भाङ्गवि अजगव धनुक सोलावे । मुनि सोता भजव तुवा पावे ॥  
 जानि हाथि सरय वाणी बोल । डाकि करहु नर हरि रोल ॥

### श्लोक

सीतायाः स्वसावयं एवं निवास्य राधवः ।

ऋषिमाश्यान्व जनवन् जनाम मिथिलां प्रति ॥

सूत्र०—सीतात रूप सम्प्रति मुनिये रामक मने किञ्चित् भावान्तर मिलल ।  
 जानकी वियोग निमित्त निव्वासको कारि ऋषिक सम्बोधित बोलल ।

श्रीरामचन्द्र—हे महा मुनिराज, ये महेबाक धनु वचाधिक कठिन, ताहेक  
 गुण दिते हामार योग्यता कैचन हय ? तथापि तोहार आज्ञा  
 पालिते लागय ऋषिराज, जानि सत्तरे चलह ।

सूत्र०—उहि बुलि सोदर सहित ऋषि पावु श्रीराम मैछ मिथिला चलल  
 ताहे देखहु शुनह, निम्नरे हरिबोल हरि ।



ध्रु०—रमया चले मिथिलाक याइ ।

राजीव लोचन दयाम सुन्दर सोदर सज्जहि पाइ ।

पद—शुनिये रामजीक काहिनी मिलल मोह सुधारि ॥

भाय भिन्न रीत भेलि किञ्चित नित मदन विगारि ॥

वदन इन्नु मदन जामर काम पहिल प्रवेश ।

चलतु राखै काम कौतुक हरतु केशव प्रवेश ॥

सूत्र०—तदनन्तर मिथिलापुर पाइ ऋषि सोदर सहिते श्रीरामचन्द्र राज

सभा प्रवेश कयल । जनक राजा उठिकहु राम लक्ष्मण सहित

विश्वामित्र एक आसने बैसाइ ऋषित प्रणामि स्तुति बोलल ।

जनक—हे ऋषिराज, तोहारि आगमने आजु हामार मिथिलापुर पवित्र

भेल मेरि महाभाग्य मिलल ।

सूत्र०—ऋषि आशीर्वाद श्लोक पढ़ल ।

### श्लोक

ऋषि—चिरञ्जीव चिरञ्जीव राजन् सज्जन रञ्जन ।

गज-बाजी-महैवर्ष-भायर्थात्मज पुतः सदा ॥

हे महाराज जनक, पुत्र पौत्र सहित तोहो चिरकाल सुखी हब ।

तोहार सत्कारे परम सन्तोष भेलो ।

सूत्र०—जनक राजा राम लक्ष्मण रूप निरेखि परम आश्चर्य हुवा सुनित पूचल

जनक—हे ऋषिराज, उहि बालक दोहो । अद्भुत मधुर मरुति देखि परम

आनन्द भेलो । काहेर कुमार, किछ देव, किवा मनुष्य हामु बूजये

नाहि फारि । उहि सुकुमार कुमार दोहोक देखि हुवय सन्तोष भेलो ।

सूत्र०—ताहे जुनि ऋषि श्लोक पढ़ल ।

### श्लोक

विश्वामित्र—सुतो दशरथस्यैतो आगती राम लक्ष्मणी ।

बुद्धिनुस्त्व सीतायाः स्यप्यंवर दिव्याया ॥

हे महाराज तोहारि परिचय नाहि । ये दशरथ राजा तोहार परम

मित्र ताहेर कुमार दोहो हामार परम शिष्य । आराधनर नाम राम

लक्ष्मण । तोहारि दुहिता सीतार स्वधर्मर देखिते इहा आवलो

इहा जानि सत्करे समाज मिलाइ महेजक धनु आनह ।

सूत्र०—जनक राजा महाहर्षे राम लक्ष्मणक आलिङ्गि, बोलल ।

जनक—आः छन्य धन्य दशरथ राजा । ऐवन परम सुकुमार कुमार

ताहेर गृहे ताहेर भाग्यक महिमा कि कहबे ।

सूत्र०—तेहि युलि राजा परम उत्तमे शङ्ख शब्दे सम्वाद नाइ बहुत

वजायल । मणिमन्त्र मन्त्रीक आदेश कयल ।

जनक—एये मणिमन्त्र, ये नृपति सब वासा करि रहैछे ताहेक सत्करे

आनि समाज मिलाव ।

सूत्र०—इति व्युत्था मणिमन्त्र निष्क्रान्तः ।

### श्लोक

निशम्य परमा रामा रामायमन कौतुकम् ।

सखी सम्प्रेषयामास जानकी कनकावतीम् ॥

सूत्र०—तदनन्तरे डोल, उड्का, घड्डा, सोमुख, मृदङ्ग, ताल, करताल,

काहाल कोलाहल महीसय रव जुनि जातकी सखीक सम्बुद्धि

बोलल ।

सीता—आहे कनकावती, कि निमित्ते सभात हरिष याजन शुनिये ? कोन

राजा आवल सत्करे जानगिया । हामार वाम अङ्गे फन्दे । कोन

कुशल कहे, इहा जानये नाहि ।

### श्लोक

तस्याः कथामाकर्ण्य कौतुकात् कनकावती ।

ययी राजसभां साध्वी सीतां नृणां सत्वरम् ॥

सूत्र०—सीताक ऐवन आवेख शुनिकहु कनकावती सीताक परणाम कय

येके चलल ता देखह मुनह; निरन्तर हरि बोल हरि ।

### गीत

#### रागधनभरे—एकताली

ध्रु०— कौतुहले चले मामि । राम परिचये लाइ ।

कामिनी कनकावती । याह राजहंस गति ॥

पद— पावे सभाक सती । देखल रघुपति ॥

येवन यमन माज । उदित नक्षत्र राज ॥



देखि रूप लावणु । भेलि पुलकित तनु ॥  
धुरे नयनक नीर । तनु मन नोहे बिह ॥

सूत्र० — सभामध्ये रामक रूप आवश्य देखिये परम विस्मित हुया सीताक  
आगु गिया कनकावती परि परणामि बोलल ।

कनकावती—आहे प्राणसखि ! तोहार महोदय मिलिल ।

सीता— हे प्राणसखी ! तोहो कि देखल, कि सुनल सत्यरे कहा ।

कनकावती—आहे जनकनन्दिनी ! तोहो याहेर निमित्त प्राण राखइ, सोहि  
दशरथ राजकुमार कोटि कन्दर्प दप दशन रूप श्रीरामचन्द्र  
तोहारि स्वयम्बर मुनिये आवल । नाहे देखि राजा जनक आनन्दे  
कुन्नुनि वजावल । हे सखि, रामक कि आश्चर्य मानुष रूप की  
कहवो ; एक अङ्गक आवश्य सन बरिये कहिते नाहि परि ।  
सखि ! तथापि किछु कहिछि ता सुनह ।

### सदिमा

मुनि सखि यचन स्वकृप । कि कहव रामक रूप ।  
इयाम भुरति पीतवास । घने येन्ने त्रिबुधिर विकास ॥  
मस्तक छत्रक वेश । नील आकृष्टित फेस ॥  
रुचिकर कर्ण अतुल । नासा नील तिल फुल ॥  
वदन इन्दु परकाश । अक्ष अक्षर मन्द हास ॥  
ओतिग दशनक पामि । माणिक झिकमिक कान्ति ॥  
मदन धनु झुथ झङ्ग । भुज युग बलित भुजङ्ग ॥  
नयन पङ्कज मन पाता । करतल उतपल राता ॥  
आङ्गुलि ललित अमूल । नखचय चान्दक तुल ॥  
सुन्दर उदर कटि हन्ध । सोहे सिंहवन्ध कन्ध ॥  
उठ करि कर निरुपाम । चरण कमल केय इयाम ॥  
गदतल रानुल कान्ति । ध्वज यव पङ्कज कागति ॥  
मानुष ऐवन रूप । नाहि मुनि कहवो स्वरूप ॥  
नवीन वयस मुकुमार । भेलि नारायण अवतार ॥  
किनो भेलि नाम्य तोहारि । तुष्ट नख तक्षणी कुमारी ॥

विधि मिलायल भानि । तेरि मनोरथ जानि ॥  
अथ सब पुरव आस । बिरह दुख गेल नाछ ॥  
पावल स्वामीक कोल । कर नर हरि हरि रोल ॥

कनकावती—आहे सखि ! यचन महापुरुष लक्षण देखल हामु जानल ओहि  
ईश्वर नारायण ; श्रीरामरूपे तोहार कियाह हेतु आवल । इहात  
किछु शङ्का नाहि करबि । सखी ! तोहार मनोरथ साफल भेल ।

### श्लोक

श्रुत्वा सखी मुखाश्रमचन्द्रस्य चरितामृतम् ।  
मुचिष्ठता पतिता सीता सुमहा हर्ष धषिता ॥

सूत्र० — स्वामीक परम चरित्र मुनिये सीता महा हर्षान्विता हैवा पड़ल ।  
येन्ने प्रेमरसे महा आकुला भेलि ता देखह गुनह, निरन्तरे हरि  
बोल हरि ।

### गीत

#### राग धनधी-एकताल

ध्रुव० — स्वामीक चरित्र मुनिये कुमारी ।

भेलि पुष्पक तनु बैसन आकुल, कमल नयन धुरे वारि ॥

पद — राम चरण चित्त धिर चिन्तिये, मयना मुदि रह माइ ॥

प्रेम परश रस राजनन्दिनी येच मानस अभिया सुराह ॥

याहे बिरह बहे रहेना जीवन सो पिठ पावल कोल ॥

आनन्द सिन्धु मयन मन कानिनी, कृष्ण निङ्कर ओहि बोल ॥

सूत्र० — सखि कनकावती, मदनमन्धरा सीताक चरित्रहु आञ्चोरे अङ्ग  
मुक्ति प्रथोध बोलय ।

कनकावती—हे प्राण सखि ! तोहो याहेर चरण चिन्ति चिरकाज रहैछ, से  
रामचन्द्रक विधि हाते मिलावल ।

मदनमन्धरा—हे सखि ! आनन्द समये तोहो कि निमित्त आकुल भेलि ?  
हे माजि ! स्वस्थ हव ।

सूत्र० — सखी सयक बाणी मुनि सीता आकुल भाव तेजि रामक चरण  
चिन्तिये एक पाछ हुया रहल ।



## श्लोक

ततो नृपान् मधावीथ मणिमन्तो नृपातया ।  
कारयामास महर्षी सभाभुत्सवशोभिताम् ॥  
सूत्र०—तदनन्तर मणिमन्त्र मन्त्री राजासबक आनिये जैके महा सभा  
मिलावल ता देखह सुनह, निरन्तरे हरि बोल ।

## गीत

## राग कनाड़ा—परिताल

श्रु०—अये नूर सब घर घर वाप । कामे धरणी परम प्रताप ॥  
पद—साहु कण्ठे खाण्डा उड़िहाते । दशन कामुरि झरुय माये ॥  
दरये करन्त घर मार रोल । आवल राजसभा करि कोल ॥  
सूत्र०—सै राजा सब ऐचन थीमन्त्र भायना कय एक पाश हुया सभात बैठल ।

## श्लोक

सखीभिः सकमभेद्यां जानकी जनकोऽनयन् ।  
महेश धनुः स्कन्धे निधाय शोभितां सभाम् ॥  
सूत्र०—तदनन्तर राजा जनक अग्रन्तर प्रवेशिये महेशक अजगव धनु कन्धे  
करिये दुहिता सीताक वस्त्र अलङ्कारे मण्डित करिये सुवर्ण  
पंकजमाला हाते दियाकहु सखीसब सहित यैके उत्सव उत्सुके सभा  
प्रवेश करावल ताहे देखह । निरन्तरे हरि बोल हरि ।

## गीत

## राग सुहाइ—चुटकलामान

श्रु०—जानकी कामिनी कौतुके चललि लीलाये ।  
सखी सब सङ्गे रङ्ग करतु कैलि, मेलि आञ्चोले हुलावे ॥  
पद—नव पिठ परस रसिक करु वाला माला करसले लोले ।  
चरण रञ्जिज मणि मञ्जिर क्षणकित जनक किङ्कणी रोले ॥  
मत्तगज गमिनी कामिनी माइ याइ निज पिठ पाशा ।  
हेरिये नृपसय मदने दहतु सन कहतु कुण्ठाक दासा ॥  
[सूत्र०—राज नन्दिनीक नव यौवन रूप लावण्य निरेखि राजा सबक काम-  
वाणे पीड़ल अचेतने मूर्च्छित हुया पड़ल । पुनः बेतन लभिये उठिकहु  
परम आकुल भावे सीताक कातर कय राजा सब बोधये लागल ।

एकराजा—हे प्राणेश्वरि ! काम सागरे मगन भेलो; निस्तार करह ।  
अन्यराजा—( आकुलि मुखे लैया बोलल ) हे राजनन्दिनी ! मदने मन  
मदये ! प्रिये ! हामाक हस्ते परस ।

आर राजा—( दशन केर कामुरि बिनये बोल ) हे सुन्दरी ! मदत वाणे हामार  
प्राण फुटि याइ । वनन अभिया रस भरखि हामाक जोवागो ।

आर राजा—( कामे भुलि बोलय ) हामार मूढे मत महाबड़ थिक सब  
तोहार वाणी देवद । हामो तोहार चरणक दास भेलो । हामार  
आगे खानिक लभिये । कटाक्षो निरेखि प्राणदान देह ।

सूत्र०—ऐचन कामे मत हुया राजा सब नाना विष बीभछ भायना  
करय । पैलि सीताक सखी वनकावती, मदनमन्धरा, चन्द्रावती,  
सूर्यप्रभा बाहु राजाक गोड़े मारि भरचय, काहुक हाते ठेङ्गना  
गारय, काहुक गले वस्त्र बांधिये हुइ तिन सखीये घषावे, से  
सब मुखको न लणय । तथापि नृप कुमारीक कातर कय थिक ।  
अये लोक, हरिक भक्ति हीन कामासुर पुष्पक देखह । जगतक  
माता जनकनन्दिनी ताहेक जागये नाहि । इहा जानि निरन्तरे  
हरि बोल हरि ।

## श्लोक

जगद जनको नाभं पदपतंसदगुर्नृपाः ।  
इदं सर्वं करोति यः तस्मै सीता समर्पये ।

सूत्र०—जनक राजा राजसभाक स्वस्थ कय बोलल ।

जनक—आहे राजासब ! हामु सत्यवाणी कहैछि ता सुनह । सीताक  
विवाह निमित्त चिन्तिते ओहि महेशक धनु गणय हथै पड़ल ।  
तदनन्तरे आकासीवाणी सुनलो—ओहि धनुन ये गुण दिते पारय  
ताहेक माये कुसुम माला दिये गोता स्वागो बरव । इहा सत्य  
जानि यत्न करह ।

सूत्र०—ओहि वाक्य सुनि सत्यधनु नाम राजा परम आहम्बरे काचि  
गिया पहिनेहि धनु धरल । दशन कामुरि गुण दिते धित हुवा  
पड़ल । तदनन्तरे चन्द्रकेतु धनु धरि कहु कथम् कथमपि उल्लासि  
धनु सैते पड़ल । ताहे देखिये राजा पुरञ्जय परम आटोपे धनु  
धरि बाहु बने लाइदाक ना पारि उफरि पड़ल । तदनन्तर राजा  
कुमुदास कटित धन्य काचिबहु अघर कामुरि धनुक दोपदिना



तुलि महाप्रथाम पाइ विद्वेष करल । लाज होइ समजात पहि  
हात पाइ आचरय ।

### श्लोक

राममाह मुनिर्वत्स ! किन्निरीक्ष्येह तिष्ठसि ।

कौशल्यानन्दनोत्तिष्ठ त्वं सख्यं कुरु काम्युक्तम् ॥

सूत्र०—हे सामाजिक, राजा सबक परम बीभत्स देखिये मुनि रामक बोल ।  
विश्वामित्र—हे कौशल्यानन्दन ! तुहू कि निमित्त पेलि रहैछ ? उठह, ओहि  
धनुत सत्वरें गुण लगाव ।

श्रीराम—(श्रुतिक प्रणाम कय बोल) आहें मुनिराज ! हामु बालक, ओहि  
धनु वज्राधिक कठिन । इहात गुण दिते हामार सामर्थ्य केचन  
होइ ? तथापि तोहार आज्ञा पालि यत्न करब । ये धनुत गुण  
दिते महाराजा सबो नाहि पारय इहात हामात कोन लाज ?

सूत्र०—पीत वसन काजनि काधि लीलाये चलल ।

राजासब—( बिहसि बोलल ) ओहि काहेक छवाल ! कि उपालम्भ भेल ।

सूत्र०—श्रीरामचन्द्र अजगव धनुक बाम हाते धरिकहु यैसै कुसुम मालाक  
उपरक लेपि पुनर्वार लुम्फि धरल; पेलि राजा सय मुख मलिन  
भेल ।

### श्लोक

धृते धनुषि रामेण सीता शङ्कित-मानसा ।

अनन्त कण्ठपं पृथ्वी याचित्वेदं जगाद सा ॥

सूत्र०—हे सामाजिक ! खेलन रामचन्द्र अजगव धनु धरल, सीता शङ्कित  
भावे चिन्तित भेल ।

सीता—हा हा हामार स्वामी परम सुकुमार नदीम बयस ! वज्राधिक  
कठिन महेशक धनु, इहात गुण दिते स्वामी जानो नाहि पारय ?  
हा हा पिता कि दारुण कर्म कयलि ! ( ओहि चिन्ति पृथिवीक  
कातर कय बोलल ) हे माता वसुमति ! तुहू धिर हुमा रहब ।  
हे पिता अनन्त ! तुहू भाल कये पृथिवी धरब । हे ईश्वर  
कूर्मराज ! तुहू अनन्त पृथ्वीक सप्रज्ञे धरब । तोरा सबक  
प्रसादे स्वामी यदि धनुत गुण दिते पारय, तब आमि अगतिर  
गति हवें ।

सूत्र०—ओहि बुलि सीता स्वामीक गमुलि निरिखि रहल ।

### श्लोक

रामस्तु शङ्कितं सीता निरीक्ष्य कृपया प्रभुः ।

प्रसह्य सख्यमकरोत्तलीलयाजगव धनुः ॥

सूत्र०—से कृपामय रामचन्द्र सीताक सकल भाव पेलि तत् काले लीलाये  
धनुत गुण लगावल । ईश्वर पुरुषरामचन्द्र हासि हासि अप्रयासे  
कयें मान टाने धनुत टङ्कार कयल । ठटकार लवदे, सध्यभागे धनु  
भागि पचारे छिड़ल । येचन वज्रपात भेल तद्वत् रामक महा  
महिमा पेलि राजा सब सचकित भेलह । सीता धनुभङ्ग पेलि  
आनन्दे मगन हुवा यैच श्रीरामक माये कुसुम माला दिये स्वामी  
बोलि बरल, तो देखह पुनह । निरस्तरे हरि बोल हरि ।

### गीत

राग—माहुर ।

ध्रु०—आनन्दे राजननिन्दनी हामे । रामक पाण चललि लख तासे ॥

पव—स्वामीक माये माला परिधाइ । करि परणाम पावे परि माइ ॥  
धरिकहु रमणी राम हासि तोले । स्वामिनी कमिनीआञ्चोले डोले ॥

सूत्र०—हे सामाजिक । सीता रामक स्वामी भाये धरिये कपूर ताम्बूल  
योगाइ आनन्दे रहल । ताहें पेलि राजा सब लोक कोपे मोहित  
हुवा धनुबाग धरिये रामक परम दर्पकय गरजे ।

राजासब—आये ! काहेक छवाल ! आ हामार कन्या ओहि लिया पाइ !  
हाम सब राजाक धिक धिक् ।

सूत्र०—ओहि बोलि धर मार रोल आन्दोल बहुत कयल ।

### श्लोक

श्रुत्वा सीताभवदभीता भूपाल वीरभाषितः ।

हरोद वेपथुमती शोचन्ती च पतिं प्रति ॥

सूत्र०—राजा सबक परम आन्दोल रोल जुनिये राजननिन्दनी भये परम  
आकुल भेलि । जानकी येने स्वामीक लागि विलाप कय बोल ता  
देखह पुनह । निरस्तरे हरि बोल हरि ।



सीता—हा हा विधि, हागार कि व पाल मिलल ! हरि हरि, राम स्वामी  
परम मुकुमार नवीन वस्त्र, सङ्गे सोदर माय सहाय । ओहि परम  
निकरुण दारुण राजा सबके कंचे युद्ध जिनिय ? हा हा देख विधि  
कोन अपराधे हामाक बञ्चल ।

सूत्र०—ओहि बोलि जानकी वंचे स्वामीक विलाप कयल, आहे समाजिक  
लोक ता देखु शुकुह । निरन्तरे हरि बोल हरि ।

गीत

राम गीरो—विधमताल ।

ध०— नाइ नाइ धेतन तनु नयने धुरे धारि ।  
विधपति भाइ पिडक भाइ तापे परि दुगारि ॥

पद— पुरव जनम पुद्गल परम पावल पद ओहि ।  
बहुम विधि हातक निधिहरे अभागीक मोहि ॥  
पुस्तकवस्तुभांगिया आपुल करतु हारि हामारि ।  
हरि हरि हमरे द्वास फोकारे पदुप मुख निहारि ॥

श्लोक

नीतां सीतां ततो रामः; निरीक्ष्य कृपया प्रभुः ।  
प्राह प्रियां समाश्वास्य मा भैः स्थिते मयि ॥

सूत्र०—प्रियाक परम सन्तप निरेखि रामचन्द्र बहु भेलि प्रियाक बरि बहु  
आश्वास कय बोलल ।

रामचन्द्र—हे प्राणप्रिये ! तुहु काहेक समय करह ? ओहि राजा सब हामार  
आगु कोन हय ? येचे सिद्धक आगु बालक हरिण । हामाक बाण  
प्रहारि एहि क्षणे पलायव । तुहु आजु कीतुक देखह ।

सूत्र०—ओहि आश्वास करिये रामचन्द्र धनुक टङ्कार करिये राजा सबहक  
बोल ।

रामचन्द्र—भाये पापी राजासब ! हामु धनु भङ्ग कय जानकी पावल, कि  
निमित्त इहात विपन्न आधारह ? अत सकति धिक हामाक समर  
करह ।

सूत्र०—रामक बाणी सुनि नृपसब परम आटोपे टङ्कार कय बाण बरिपल ।  
रामचन्द्र सोहि शरसब देखिये राजा सबक गावे गावे कण प्रहारि

हय भेदल । काहु राजाक उर कर काटि कटि पलायल । काहुक  
बाहु कन्ध छेदल । अपर नृप सब मरण भये पलायल ।

श्लोक

निरीक्ष्य साक्षाद्रामरूपं धिक्कृतं जनको मुदा ।  
विवाहे विधिवत् वीरो राघवाय मुतामदात् ॥

सूत्र०—तदनन्तर रामचन्द्र परम विक्रम देखिये जनक राजाक मने अति  
आनन्द भेल । दूध पठाइ राजा दशरथक अति सत्करे अनावल ।  
राजा दशरथ पुत्रक विक्रम, सीताक प्राप्ति सुनिये आसिकहु  
जनक परक कीतुके आलिङ्गि धरल, येचे नाचये लागल । राजा  
जनक विवाहक समार पिलायल । विश्वामित्र कुसण्डि करिए  
होम आरम्भल ।

श्लोक

श्रुतिः निरीक्ष्य सीतायाः रूपं लावण्यमद्भुतम् ।

पुलकान्तः पपातोऽर्च्यं कामार्तां वृष्टितो यथा ॥

सूत्र०—सुख चन्द्रिका करिये सीताक भुवन मोहन रूप निरेखि श्रुति कामे  
आतुर भेलहु हातक धव श्रुच सहि परल । सरोर कल्पि मुहुरि  
परल ताहे पेखि लिख्य गालन प्रबोध बोलल ।

गालन—हे गुण तोहार कोन न्ववहार ? स्वस्थ हव ।

श्लोक

तलस्थितेन मातङ्ग्य मुनिर्मन्त्रमुदीरयेत् ।

तदोद्गाह विधौ तन्मिन् उत्सवः सुमहान् भूत् ॥

सूत्र०—तदनन्तर मुनि चेतन लमिए धिष्णु रमरि हाते श्रुच धरिए विवाहक  
होम कराइते लागल । सोहि समये धर कन्याक केश एक ठाम  
करिये पानी डालिते ब्रह्मा, इन्द्र राधादि देवता सब येवन आनन्द  
मिलावल ता देखहु शुकुह । निरन्तरे हरिबोल हरि ।

गीत

राम मुदाह—यतिमान ।

रघुनाथ कीतुके करतु विवाह ।

सुरपुर मिलल उत्साह ॥

ध०—



सम्भू स्वयम्भू गुण गाये । इन्द्र मृदङ्ग रङ्गे वाये ॥  
वरिये कुसुम सुर रामा । पूरल खव मन कामा ॥  
सूत्र०—ऐवन परम महिमा आनन्दे सीताक विवाह दिये राजा जनक यश  
सर्वस्व पारल मय रामक धौतुक बेहल । दशरथ राजाक बहुत  
सम्मान कय अयोध्याक लागि वरकथा पठावल ।

## श्लोक

ततोऽति-कीर्तुको रामः प्रियया सह सीतया ।  
ससोदरो मुदाध्याजदयोध्याम्प्रययौ पुरिम् ॥  
सूत्र०—तदन्तर प्रिया सीता सोदर सहिते श्रीराम । नन्द येने अयोध्या चलल,  
हे लोक ता देखह गुनह; निरन्तरे हरि बोल हरि ।

## गीत

राम भादिमाली-यतिमान ।

ध्र०— करतु कीतुके चलतु रमया रमणी सङ्गहि जाइ ।  
नील घने येन विजुरि उजुरि कुञ्जइ गमनी माइ ॥  
पद— कनक कङ्कन सतके लमके टमके कय लयलासः ।  
पिउक पोखि मुख आखि मुदि रह सज्जित इपत् हास ।  
मल मातङ्ग सङ्गे येचन तरुणी करिणी आवे ।  
जय जय रत्न चौदिसि उत्सव कृष्ण किङ्करे गावे ॥

## श्लोक

ततः आगत्य तरसा भार्गवो भ्रुकुटि मुखः ।  
स्कन्धे निधाय कटिनं कुठारं राममवतीत् ॥  
सूत्र०—ऐचन महोत्सवे रामचन्द्र सीताये सहिते चलेछे । तदनन्तर महेस  
गुरुक धनु भङ्ग शब्द सुनिये परम क्रोधे परशुराम प्रचण्ड मूर्ति  
हुवा स्कन्धे कुठार धरि कहू रह रह बोलि रामचन्द्र आग वेढ़ल ।  
परशुराम—अरे बेरटक पुत्र ! मेरा गुरुक धनुभंग कय तोहो कहे पाव ?  
परशुरामक कथा तोहो जानये नाहि ? हामु एकविंशतिवारे भूमि  
छमिये सब क्षत्रियेर मुण्ड मारखो । मे कारणे कुठार मलिन भेल  
अः आजु तोहोके स्कन्धे रुधिर निका करवो ।  
सूत्र०—ओहि बलि बाहु काशुरि परम चटि चपटि करिये धिक ।

## श्लोक

तस्मिन्मयाभवद्भीतः भयाद्दशरथो नृपः ।  
स्कन्धे च वसनं कदम्बा भार्गवरत्न पद् स्पतन् ॥

सूत्र०—परशुराम क्रोध भावना देखि राजा दशरथ प्राण अन्तरीक्ष भेल ।  
हा हा सर्वनाश भेलो बोलि गने कापर बाग्नि भार्गवक पावे  
पड़िये अनेक कातर कयल ।

दशरथ—हे प्रभु परशुराम ! हामार पुत्र रामचन्द्र बालक मति । इहार  
दोष परष गोलाजि । तोहारि वरणक दास भेलो । साथे खेर  
घरो हामाक पुत्र दान देहु । मय नाहि क्षमा करब तब पुत्रक  
छोड़ि हामाक माथा लेहु ।

सूत्र०—ऐचन अनेक कातर कयल । तबहु भार्गव क्रोधे बहुत बलकय ।  
ताहा देखि दशरथ राजा हृदय मुष्टि हानि बाहुरि रामचन्द्रक  
गले बाग्नि धरि कहू बोलय ।

दशरथ—हा हा पुत्र अन्तकक हाते पड़लि । तोहारि दरसन आजु परिछेद  
भेल ।

सूत्र०—ओहि बोलि दशरथ बहुत विषाद कयल ।

## श्लोक

विलोक्य भार्गवं सीता सीता उपेतमानसा ।  
रुदोद पतिमालिङ्ग्य हा हतास्मीतिवादिनी ॥

सूत्र०—तदन्तरे कालान्तक प्राप परशुरामक निरिखि सीताक शरीर  
काम्ये ।

सीता—हा हा सकले गुण भावन स्वामी हामार आबु काहेक देखह;  
बिहिक भिक्षुम्हना कि भेल !

सूत्र०—ओहि बुनि स्वामीक आसक्ति धरिये येने विलाप कयल ताह  
देखह गुनह ।

## गीत

राम गौरी—यतिमान ।

ध्र०— हरि हरि रमणी करये पड़ि माइ ।  
पेलि परम पिउ जीव येने याइ ॥  
पद— पावल कल पुष्ये पड़ु हामि ।  
हाते हरये बिहि नवनिधि स्वमी ॥  
नीर झुरये फुकारये घने दवासा ।  
यङ्क विधाता कयल सब माया ॥



## श्लोक

सन्तापं प्रेक्ष्य सीतायाः भक्त्यायाः भक्तवत्सलः ।

प्रियां प्रोवाच परमां पाणिना गाञ्जयन्मुखम् ॥

सूत्र०—भक्ता सीताक ऐचन परम सन्ताप देखिये श्रीरामचन्द्र होते प्रियाक मुख मोचल । सन्तैम बाणी वलि आस्वास कयल ।  
रामचन्द्र—हे प्रिय ? ओहि वनवासी श्रुतिक दर्प देखिये तोहारि तरास मिलल । ओहि हामाक आगु कोन पतझ ? देख एहि धरने दुष्ट द्विजकदर्प चूर करव । हे प्राणप्रिये ! आजु कौतुके देखह श्रुतिक मुख मुण्डाओ ।

सूत्र०—तदनन्तर पुनर्वारि दशरथ दशमे तृण धरिये परशुरामक आगे परल ।

दशरथ—हे श्रुतिराज ! हामाक पुत्र दान देह । तोहारि पावे धरैछि ।  
परशुराम—(श्रोत्रे दशन अन्धिये राजाक शत्रिये बोल । अये कुठार ! रेषा माताक कण्ठ छेरिते तुहो पारव, आजु दशरथ कुमारक प्रति तोहो अति शान्त भेलि ! आः आजु तोहार पिक्कार, हामार पिक्कार थिक !

सूत्र०—ओहि बोलि कुठार तुलि श्रीरामक निरेखि माया लङ्कारि कुठार उद्धक छेपिये पुन लुम्बिक धरि कह कुठार निरेखि बाहुत कामोर देखह । शरीर काम्ये ।

## श्लोक

विश्वामित्रस्तदागत्य भार्गवं प्राह कोपतः ।

अरे द्विज कुलाङ्गार मत् शिष्यं हन्तुमिच्छसि ॥

विश्वामित्र—अये दुष्ट द्विजाधम ! हामार परम शिष्य रामचन्द्र । आहैक बधो धन तुह भेलि ! अये यत सकति विक आजु हामाक मुट देह । तो त्रि दर्प चूर करव ।

सूत्र०—परशुराम महातोषे वण्ड परल । विश्वामित्रो वण्डधरि भावल । दोहोर वण्ड प्रहारक चोटे चूर भेल । तदनन्तर चवडि धरिये मुट कयल । प्रहारक चोटे दोहो चवडि छिडि परल । तदनन्तर बाहुमुट कयल । दोहो दोहोक धरिये पडि बागरय । दोहो श्रुतिर परिधान चर्म छसि पड़ल । विष्णुक अंश अजय दीय्ये परशुराम ताहेर पराक्रम सहये ना पारि विश्वामित्र भङ्ग मानि प्राण रक्षा कये पलायन । परशुराम पुनर्वारि कुठार तुलि श्रीरामक गज्जय ।

## श्लोक

लक्ष्मणः प्रेक्ष्य तत्-दर्पं राममाह सकोपतः ।

आज्ञापय बधे चास्य दुर्जनस्याततायितः ॥

सूत्र०—श्रुतिक परम दर्प देखिये लक्ष्मण कोपे वरव काचि कह रामक प्रणाम कये बोल ।

लक्ष्मण—हे रघुनाथ ! ओहि आतताइ दुष्ट द्विजक बधे कोल दीन थिक ? हामाक आज्ञा करह, आहैक प्राण छोड़ान्नी ।

सूत्र०—ओहि बोलि धनुष टङ्कारि श्रुतिक समुल होइ लक्ष्मण दशरथक बोल ।

लक्ष्मण—हे पिता ! ओहि क्षत्रियघातकी परमपातकीक कत कातर करैछ । सखर अन्तर हव । आहैर मुण्ड मारो ।

सूत्र०—ताहे देखि राम हासि लक्ष्मणक पाचु कय बोलल ।

रामचन्द्र—अये भाया ! तुह बालक, रह रह । ओहि दुष्ट द्विजक हामो दण्ड करवो । तुह मुखे मुट देखह ।

## श्लोक

धनुष्टङ्गारमकरोत् भार्गवं भीषणं प्रभुः ।

तिष्ठतिष्ठेति तम्प्राह नयाम्यद्य यमालयम् ॥

सूत्र०—छारङ्ग टङ्कार कयकहु श्रीरामचन्द्र परशुरामक समुल हुवा बोलल ।

रामचन्द्र—आये दुष्ट द्विजाधम ! शत्रिय सब मारि तोहो गरव करैछ ?

तोहार माता रेषुकाक काटिये पाप आचरल । सोहि कथा कहिया हामाक भीति देखाव ? रह रह आजु तुह जमपुर देखव । यत सकति थिक हामाक समुल हुवा रह ।

सूत्र०—हे सामाजिक ! श्रीरामक धनुष्टङ्गारे परशुराम हृदय विदारल । परम तरासे सब शरीर काम्ये । हातक परशु खसि पड़ल । प्राणक कातरे संचे पलायन, आहै लोक ता देखह ।

## गीत

राम कामाङ्गा-परिताप ।

बाबे धरि भारङ्ग रघुनाथ ।

तरासे श्रुतिक कम्पव पाव हात ॥



पद—परशु जसल दूर भेज राग । पड़ल दण्डयते रामक आग ॥

राखहु तोहारि अंग हामु राम । बगने छेर धरो करो परनाम ॥

सूत्र०—परशुराम श्रीरामक आगे पहिने बहुत कातर कय बोल ।

परशुराम—हे प्रभो श्रीराम ! तोहो परम ईश्वर । हामु तोहारिगे अंग ।  
इहा ना जानि दर्प कयलो । हामाक दोष मरय मोसाजि ।

सूत्र०—भार्गवक कातर देखि लक्ष्मण सीता बहुत हास्य कयल ।

श्रीराम—(विहसि बोल) हे भृगुपति राम ! हामार परम अपोष बाण  
तोहारि बध निमित्त उद्यम भेल । इहाक सम्बरण करिते न पादि ।  
( ओहि बोलि बाणा आकर्षण पूरल । )

परशुराम—(दृष्ट नख मुख लैये तरासे) हे स्वामी ! तोहार धर्मक पुन  
भेलो हामाक प्राण दान देहु ।

श्रीराम—(विहसि बोल) आये भार्गव ! तुहु निर्मवे रह । तोहार जीव  
राखवो । किन्तु हामार बाण नख नाहे । तोहार स्वर्ग पथ छेद  
करोहो ।

सूत्र०—ओहि बोलि श्रीराम गगनरु प्राणि बाण खोज । परशुराम श्रीराम  
आलिङ्गि बोलल ।

परशुराम—हे बाव ! तोहारि प्रसादे आबु प्राण रहल । आः पुनर्वारि  
उदजल ।

सूत्र०—ओहि बलि परशुराम लपोवने प्रवेशल ।

### श्लोक

निजिजन्य भार्गवं रामं प्रियया सह राघवः ।

पुरी अयोध्यामाविश्यत् मानृभिः सम्प्रवेशितः ॥

सूत्र०—हे सामाजिक ! भार्गव रागक जिनिये श्रीरामचन्द्र प्रिया सहिते  
अयोध्या पुर प्रवेशल । रामक माना कोसल्या श्रीरामक विजय  
बात जिनिये अनेक स्त्रीसम सहित परम मङ्गल गीत आनन्दे  
आजाना बजाइ बरकन्दार हात एक ठाम करिकहु महोरसये गृह  
प्रवेश करावस । आसने बंठाइ रामक सीताक साथे हूबलित  
सिञ्चारि आनन्दबाद कयकहु परम उत्सुक कोसल्या आनन्दे नृत्य  
करल । रामक ऐवम विशाह महोत्सव सम्पूर्ण भेल ।

### श्लोक

भृशं दुष्टमना रामः सम्प्राप्य परमां प्रियां ।

तथा कुर्वन् कामकेलिं रमे मणिमये गृहे ॥

सूत्र०—विभूयनमोहिनी पदुमिनी जानकी सीताक लभिकहु, श्रीरामचन्द्र  
आनन्दे मगन हुवा मणिमय रत्नमन्दिरे प्रवेशिये सीताये सहित  
येवन परम कामकेलि कय रहल ता देखहु धुनहु । निरन्तरे हरि  
बोख हरि ।

### गीत

राम कल्याण-खरमान

सूत्र०—ए कह रमया, कह रमया रस केनि ।

काञ्चुरी छुरि फुरे कुच कुच रति कौतुके करा अलि ॥

पद—मध धर धरिये अधर मधु चञ्चल । लोचन मुदि रहु माह ॥

करत मुरत मल मातङ्ग यामिनी । कामिनी यामिनी याह ॥

चञ्चर बिकुर निकर कर कङ्कन अनकित रत्नकु माला ॥

यमजल बिन्दु इन्दु मुह सोहे मोहे पड़ल भरवाला ॥

परम रसिक मुख छिरि शूललब्ध राजा नृपति प्रधान ॥

जयतु जयतु नित्य ईश्वर कृष्णक केनि सीता रस जान ॥

सूत्र०—येवन परम रसे केनि कय सीताक मनोरथ पुरि रामचन्द्र  
अनुदिने आनन्द मन्दिरे रहल ।

### श्लोक

श्रीराम विजयं नाम नाटक पूर्णताङ्गतम् ।

धीकृष्ण पादपद्मस्य प्रसादेन सुनिश्चितम् ॥

सूत्र०—धीकृष्ण पादपद्म प्रसादत श्रीरामविजय नाम नाटक सम्पूर्ण  
भेल ।

### मुक्ति मङ्गल भटिमा

जय जय ईश्वर राघव राम । पूरल थो जानकी मनकाम ॥

जग जन जीवन सोहि मुरारि । मुक्ति मङ्गल करतु तोहारि ॥

घोहि पालि पिताकेरि आस । सीता सहित खपल बनवास ॥

साधल जय थो राकस मारि । सोहि करतु नित्य मुक्ति तोहारि ॥



घालि घालि सुधीवर पाट । देलहु यो सये बानरक टाट ॥  
 बान्धल सेतु पयोधिक वारि । सोहि करतु नित्य मुकुति तोहारि ।  
 ठाटे बंदल चौदिक सज्जा । राकस लोक मिलावत सज्जा ॥  
 छेदल यो रावण कैरि माथ । मुकुति करतु सोहि रघुनाथ ॥  
 भावल सज्जे बानरक टाट । राजा भेलि भयोप्याक पाट ॥  
 यो जानकी मन पुरल मुरारि । मुकुति मङ्गल करतु तोहारि ॥  
 रामक परम भक्ति रस जाना । श्रीगुलध्वज नृपति प्रधाना ।  
 राम विजय यो करावत नाट । मिलहु ताहेक सेकुष्ठक बाट ॥  
 रामक चरणे शरण लेहु जानि । सध अग्राध मरथ तोहो स्वामि ॥  
 मुटन किङ्कुर साङ्कुर भोल । कइ सध नर भव हरि हरि रोल ॥